संस्कृत- दिग्दर्शिका

साहित्यक + सामान्य

प्रश्न - दिये गये संस्कृत गद्यांशों एवं पद्यांशों में से एक-एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

2+5=7 X 2 =14 अंक

- ✓ भोजस्यौदार्यम्
- ✓ आत्मज्ञ: एव सर्वज्ञ:
- ✓ जातक कथा
- ✓ महामना मालवीय:
- ✓ संस्कृतभाषाया: महत्वम्
- ✓ सुभाषितरत्नानि
- ✓ पंचशील सिद्धांत:
- ✓ महर्षि दयानंद:
- ✓ दूतवाक्यम

Gyansindhu Coaching Classes

1) भोजस्यौदार्यम्

ततः कदाचिद द्वारपाल आगत्य महाराजं भोजं प्राह 'देव, कौपीनविशेषो विद्वान् द्वारि वर्तते' इति। राजा 'प्रवेशय' इति प्राह। ततः प्रविष्टः सः कविः भोजमालोक्य अद्य मे दारिद्र्यनाशो भविष्यतीति मत्वा तुष्टो हर्षाश्रूणि मुमोच । राजा तमालोक्य प्राह-'कवे, किं रोदिषि' इति। ततः कविराह - राजन्! आकर्णय मद्गृहस्थितिम् -

अये लाजानुच्चैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी
शिशौः कर्णौ यत्नात् सुपिहितवती दीनवदना ।।
मयि क्षीणोपाये यदकृतं दृशावश्रुबहुले
तदन्तः शल्यं मे त्वमसि पुनरुद्धर्तुमुचितः ॥ (UP 2018 AW, AZ, 20 ZH, ZJ)

Gyansindhu Coaching Classes

सन्दर्भ- प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के **'भोजस्यौदार्यम्'** शीर्षक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद- इसके बाद कभी द्वारपाल ने आकर महाराज भोज से कहा, देव! केवल लँगोटी पहने (अति दरिद्र) एक विद्वान द्वार पर खड़े हैं। (राजा बोले) प्रवेश कराओ। तब प्रविष्ट होकर उस कवि ने भोज को देखकर

'आज मेरी दरिद्रता का नाश हो जायगा' यह मानकर (विश्वास कर) प्रसन्न हो खुशी के आँसू बहाये। राजा ने उसे देखकर कहा- हे कवे, रोते क्यों हो? तब कवि बोला- राजन् मेरे घर की दशा सुनिए-

रास्ते पर (खील बेचनेवाले द्वारा) ऊँचे स्वर से 'अरे खीलें लो' की आवाज सुनकर मेरी दीन मुखवाली पत्नी ने बच्चों के कानों को सँभालकर बन्द कर दिया। (बच्चे खीलें दिलवाने का हठ न करें।) और मुझ दरिद्र पर जो अश्रु पूर्ण दृष्टि डाली, वह मेरे हृदय में काँटे की तरह चुभ गई, जिसे निकालने में आप ही समर्थ हैं।

राजा शिव, शिव इति उदीरयन् प्रत्यक्षरं लक्षं दत्त्वा प्राह 'त्वरितं गच्छ गेहम्, त्वद्गृहिणी खिन्ना वर्तते । अन्यदा भोजः श्रीमहेश्वरं नमितुं शिवालयमभ्यगच्छत्। तदा कोपि ब्राह्मणः राजानं शिवसन्निधौ प्राह-देव!

अर्द्ध दानववैरिणा गिरिजयाप्यर्द्ध शिवस्याहृतम्
देवेत्थं जगतीतले पुरहराभावे समुन्मीलति ॥
गङ्गा सागरमम्बरं शशिकला नागाधिपः क्ष्मातलम्
सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्वमगमत् त्वां मां तु भिक्षाटनम्।। *(UP 2019 CT, 20 ZM)*

हिन्दी अनुवाद- राजा ने 'शिव-शिव' कहते हुए प्रत्येक अक्षर पर लाख मुद्राएँ देकर कहा- "शीघ्र ही (अपने) घर जाओ, तुम्हारी पत्नी दुःखी है। दूसरे दिन भोज श्री महेश्वर (शिव जी) को नमस्कार करने के लिए शिव के मन्दिर में गये। तब किसी ब्राह्मण ने शिव के समीप राजा से कहा-

शिव का आधा भाग दानव-वैरी (विष्णु) ने और आधा (गिरिजा) पार्वती ने ले लिया। हे राजन्। इस प्रकार पृथ्वी-तल पर शिव का अभाव दिखाई देने पर गंगा सागर में, चन्द्रकला आकाश में, शेषनाग रसातल में ये सर्वज्ञता और अधीश्वरता आप में आ गयी और भिक्षाटन मेरे पास आ गया।

विरलविरलाः स्थूलास्ताराः कलाविव सज्जनाः
मन इव मुनेः सर्वत्रैव प्रसन्नमभून्नभः।।
अपसरति च ध्वान्तं चित्तात्सतामिव दुर्जनः
व्रजति च निशा क्षिप्रं लक्ष्मीरनुद्यमिनामिव ॥ (UP 2018 AX, 20 ZI, ZN)

हिन्दी अनुवाद- अनुवाद-राजा ने सन्तुष्ट होकर प्रत्येक अक्षर पर लाख मुद्राएँ दीं। दूसरे दिन राजा ने अपने समीप उपस्थित सीता (नामक) कवयित्री से कहा- देवी। प्रभात (प्रातःकाल) का वर्णन करो। सीता ने कहा-

कोई-कोई बड़े (मोटे) तारे (ऐसे) विरल अर्थात् बहुत ही थोड़े-थोड़े दिखाई दे रहे हैं, जैसे कलियुग में सज्जन। मुनि के मन के समान आकाश सर्वत्र प्रसन्न (निर्मल) हो गया है। जैसे सज्जनों के चित्त से दुर्जन (दूर होते हैं), वैसे ही अन्धकार दूर हो रहा है तथा रात्रि उद्योगहीनों की लक्ष्मी की तरह तेजी से भागी जा रही है। (अर्थात् आलसी पुरुष के धन के भाँति निशा शीघ्र समाप्त हो रही है

Gyansindhu Coaching Classes

अभूत् प्राची पिङ्गा रसपतिरिव प्राप्य कनकं
गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्यसदसि ।
क्षणं क्षीणास्तारा नृपतय इवानुद्यमपराः
न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः।। **(UP 2014 BQ, 20 ZK)**

हिन्दी अनुवाद- अनुवाद- राजा ने उसको भी लाख मुद्राएँ देकर कालिदास से कहा-ते सखा। तुम भी प्रभात का वर्णन करो। तब कालिदास ने कहा- पूर्व दिशा सुवर्ण को प्राप्त कर पारे की भाँति पीली हो गयी है। गैवारों की सभा में विद्वान की तरह चन्द्रमा कान्तिहीन हो गया है। अनुद्यमी राजाओं की तरह नारे क्षण भर में क्षीणा हो गये हैं। धनहीनों के गुणों की तरह दीपक नहीं चमक रहे हैं।

राजा ने अति सन्तुष्ट होकर उसको भी प्रत्येक अक्षर पर लाख मुद्राएं दी।

(2) आत्मज्ञः एव सर्वज्ञः

याज्ञवल्क्यो मैत्रेयीमुवाच मैत्रेयि! उद्यास्यन् अहम् अस्मात् स्थानादस्मि। ततस्तेऽनया कात्यायन्या विच्छेदं करवाणि इति। मैत्रेयी उवाच-यदीयं सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात् तत् किं तेनाहममृता स्यामिति। याज्ञवल्क्य उवाच-नेति।

यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात्। अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति। सा मैत्रेयी उवाच-येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्। यदेव भगवान् केवलममृतत्त्वसाधनं जानाति, तदेव मे ब्रूहि। याज्ञवल्क्य उवाच- प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे। एहि, उपविश, व्याख्यास्यामि ते अमृतत्त्वसाधनम्।

Gyansindhu Coaching Classes

सन्दर्भ-प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः' नामक पाठ से अवतरित है।

अनुवाद- जैसा साधन-सम्पन्न (धनिकों) का जीवन होता है, वैसा ही तुम्हारा जीवन भी होगा। धन से अमरता की आशा नहीं है। (तब) उस मैत्रेयी ने कहा, जिससे में अमर न हो सकूँ, उसे (लेकर) क्या करूंगी? भगवान (आप) जो कुछ अमरता का साधन जानते हों, वहीं मुझे बतायें। याज्ञवल्क्य बोले- "तू (पहले भी) मेरी प्रिया रही है और इस (समय भी) प्रिय बोल रही है (मुझे अच्छी लगने वाली बात कर रही है)।

आ बैठ, तुझसे अमृतत्त्व (अमरता-प्राप्ति) के साधन की व्याख्या करूँगा।

याज्ञवल्क्य उवाच न वा अरे मैत्रेयि! पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति। आत्मनस्तु वै कामाय पतिः प्रियो भवति। न वा अरे, जायायाः कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु वै कामाय जाया प्रिया भवति। न वा अरे पुत्रस्य वित्तस्य च कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति। न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय सर्व प्रियं भवति।

(2015 CS.19CS, 23 ZM, ZN,2023 ZJ)

अनुवाद-याज्ञवल्क्य बोले- अरी मैत्रेयी ! पति की इच्छापूर्ति के लिए (नारी को) पति प्रिय नहीं होता, अपनी ही इच्छापूर्ति के लिए पति प्रिय होता है। (अपने स्वार्थ से ही वह पति को चाहती अथवा प्रेम करती है।) न ही अरी, पत्नी की इच्छापूर्ति के लिए (पति को) पत्नी प्रिय होती है, अपनी इच्छापूर्ति के लिए पत्नी प्रिय होती है। न ही अरे, पुत्र या धन की कामना से पुत्र या धन प्रिय होता है, अपनी ही कामना (पूर्ति) के लिए सब प्रिय होते हैं।

Gyansindhu Coaching Classes

(3) संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

धन्योऽयं भारतदेशं यत्र समुल्लसति जनमानस पावनी, भव्यभावोद्भावनी, शब्द सन्दोह प्रसविनी सुरभारती । विद्यमानेषु निखिलेष्वपि वाङ्मयेषु अस्याः वाङ्यमं सर्वश्रेष्ठं सुसंपन्नम् च वर्तते। इयमेव भाषा संस्कृतनाम्नापि लोके प्रथिता अस्ति । अस्माकम् रामायणमहाभारताद्यैतिहासिक ग्रन्थाः, चत्वारो वेदाः, सर्वाः उपनिषदाः । अष्टादशपुराणानि अन्यानि च महाकाव्यनाट्यादीनि अस्यामेव भाषायां लिखितानि सन्ति । इयमेव भाषा सर्वासामार्यभाषाणां जननीति मन्यते भाषातत्त्वविद्भिः ।

(UP 2015 DG, DI, 17 NA, MW, 21 DH, 23 ZK (2019 CS, CW, CY, 22 DR, 23 ZK)

सन्दर्भ- प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' नामक पाठ से अवतरित है।

अनुवाद- यह भारत देश धन्य है, जहाँ जनमानस को पवित्र करनेवाली, प्रेस भावों को प्रकट करनेवाली (और) शब्दों के समूह को जन्म देनेवाली संस्कृत भाषा विद्यमान है। समस्त वर्तमान साहित्यों में इसका साहित्य सबसे श्रेष्ठ तथा सम्पन्न है। यही भाषा संस्कृत के नाम से भी संसार में प्रसिद्ध है। हमारे रामायण, महाभारत आर्थि ऐतिहासिक ग्रन्थ, चारों वेद, समस्त उपनिषद् अठारह पुराण तथा अन्य महाकाव्य, नाटक आदि इसी भाषा में लिखे गये हैं। यही भाषा समस्त 'आर्य भाषाओं की जननी है' ऐसा भाषा तत्त्वविशारद मानते हैं।

संस्कृतस्य साहित्यं सुरसं, व्याकरणञ्च सुनिश्चितम्। तस्य गद्ये पद्ये च। लालित्यं, भावबोधसामर्थ्यम्, अद्वितीयं श्रुतिमाधुर्यञ्च वर्तते। किं बहुना चरित्रनिर्माणार्थं यादृशीं सत्प्रेरणां संस्कृतवाङ्मयं ददाति ने तादृशीं किञ्चिदन्यत्। मूलभूतानां मानवीयगुणानां यादृशी विवेचना संस्कृतसाहित्ये वर्तते नान्यत्र तादृशी। दया, दानं, शौचम्, औदार्यम्, अनसूया, क्षमा, अन्ये चानेके गुणाः अस्य साहित्यस्य अनुशीलमेन सजायन्ते।' (2014 CE.CG.16 SW, 18 AW, AZ, 20 ZH, ZI, ZJ, ZK, ZL, ZM)

अनुवाद - संस्कृत साहित्य रसपूर्ण तथा सुनिश्चित व्याकरण वाला है। उसके गद्य एवं पद्य में लालित्य, भाव अभिव्यक्ति की शक्ति और अद्वितीय श्रुति-माधुर्य का गुण विद्यमान है। अधिक क्या कहा जाए! संस्कृत साहित्य चरित्र निर्माण के लिए जिस प्रकार की अच्छी प्रेरणा प्रदान करता है, वैसी कोई और नहीं करता। संस्कृत साहित्य में मूलभूत मानवीय गुणों की जैसी विवेचना है, वैसी अन्यत्र नहीं है। इस साहित्य के अध्ययन से दया, दान, पवित्रता, उदारता, ईष्र्या न करना, क्षमा तथा अन्य अनेक गुण उत्पन्न होते हैं।

संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षव्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास-भारवि-भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हदि विराजते। इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च, यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितं शक्यन्ते। इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति। ततः सुष्टठूक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति।।

UP 2014 CL. 15 DF, DJ, 17 NB, MY, 19 CT, DS, DU, 22 DS, DU)

हिन्दी अनुवाद- आज भी संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कविकुलगुरु कालिदास तथा भास, भारवि, भवभूति आदि अन्य महावि अपने ग्रन्ध-रत्नों के कारण पाठकों के हृदय में विराज रहे हैं। हमारे लिए यह भाषा माता के सदृश सम्माननीय तथा वन्दनीय है, क्योंकि संस्कृत के द्वारा ही भारतमाता की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा, अखण्डता तथा सांस्कृतिक एकता सुरक्षित रह सकती है। यह संस्कृत भाषा समस्त भाषाओं में सबसे प्राचीन एवं श्रेष्ठ है। अतः ठीक ही कहा गया है-"देव भाषा (संस्कृत) सभी भाषाओं में प्रधान, मधुर एवं दिव्य है।"

(4) जातक कथा (उलूक जातकम्)

अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्यप्राप्तम्। सर्वाकारपरिपूर्ण पुरुषं राजानमकुर्वन्। चतुष्पदा अपि सन्निपत्य एकं सिंहं राजानमकुर्वन् । ततः शकुनिगणा हिमवत्प्रदेशे एकस्मिन् पाषाणे सन्निपत्य 'मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च। अस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति । अराजको वासो नाम न वर्तते । एको राजस्थाने स्थापयितव्यः' इति उक्तवन्तः । अथ ते परस्परमवलोकयन्तः एकमुल्कं दृष्ट्वा' अयं नो रोचते' इत्यवोचन् ।

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'संस्कृत - खण्ड' में संकलित 'जातक कथा' नामक पाठ के 'उलूकजातकम्' खण्ड से उद्धृत है।

हिंदी अनुवाद - विगत प्रथम कल्प में लोगों ने एक विद्वान्, सौभाग्यशाली और समग्र आकृति से परिपूर्ण पुरुष को राजा बनाया। चौपायों (जानवरों) ने भी एकत्र होकर एक शेर को राजा बनाया। इसके बाद पक्षीगण हिमालय प्रदेश में एक चट्टान पर एकत्र होकर बोले- "मनुष्यों में राजा जाना जाता है और उसी प्रकार चौपायों (पशुओं) में भी फिर (अर्थात् किन्तु) हमारे बीच कोई राजा नहीं है। राजा के बिना रहना उचित नहीं है। (किसी) एक को राजा के स्थान पर स्थापित करना चाहिए।" इसके बाद उन्होंने परस्पर एक-दूसरे पर दृष्टि डालते हुए एक उल्लू को देखकर कहा कि "यह हमको अच्छा लगता है।"

अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंहं राजानमकुर्वन् । मत्स्या आनन्दमत्स्यं, शकुनयः सुवर्णहंसम् । तस्य पुनः सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत्। स तस्यै वरमदात् यत् सा आत्मनश्चित्तरुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति। हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसङ्गे संन्यपतत्। नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन् । हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश । सा शकुनिस अवलोकयन्ती मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा 'अयं मे स्वामिको भवतु' इत्यभाषत। मयूरः 'अद्यापि तावन्मे बलं न पश्यसि' इति अतिगर्वेण लज्जाञ्च त्यक्त्वा तावन्महतः शकुनिसङ्घस्य मध्ये पक्षी प्रसार्य नर्तितुमारब्धवान्। नृत्यन् चाप्रतिच्छन्नोऽभूत्। सुवर्णराजहंसः लज्जितः 'अस्य नैव हीः अस्ति न बर्हाणां समुत्थाने लज्या । नास्मै गतत्रपाव स्वदुहितरं दास्यामि'

हिंदी अनुवाद - व्यतीत प्रथम कल्प में चौपायों ने सिंह को राजा बनाया। मछलियों ने आनन्द मछली को (और) पक्षियों ने सुवर्ण हंस को (राजा बनाया) । उस सुवर्ण हंस की पुत्री हंसपोतिका अत्यन्त सुन्दर थी। उस (सुवर्ण हंस) ने उसे वर दिया कि वह अपने मनपसन्द पति का वरण करे। हंसराज उसको वर देकर हिमालय पर पक्षियों के समूह में उतरा। अनेक प्रकार के हंस, मोर आदि पक्षीगण आकर एक विशाल शिलातल पर एकत्र हो गए। हंसराज ने पुत्री को आदेश दिया कि वह आकर अपने मनपसन्द स्वामी का वरण करें। वह पक्षियों के समूह पर दृष्टिपात करते हुए मणि के रंग के समान गर्दनवाले चित्रदृष्टि मयूर को देखकर - "यह मेरा स्वामी बने" – ऐसा बोली। मोर ने - "आज भी तुम मेरा बल नहीं देखती हो" - ऐसा कहकर अत्यन्त गर्व से लज्जा को त्यागकर उस अपार पक्षियों के समूह के मध्य पंखों को फैलाकर नाचना आरम्भ कर दिया और नाचते हुए नग्न हो गया। सुवर्ण-राजहंस ने लज्जित होकर कहा- "इसमें न तो विनय (संकोच) ही है और न ही पंखों को उठाने में लज्जा । इस लज्जाहीन को मैं अपनी पुत्री नहीं दूंगा।"

Gyansindhu Coaching Classes

6. सुभाषितरत्नानि

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के संस्कृत-भाग के 'सुभाषितरत्नानि' नामक शीर्षक से अवतरित है।

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।
तस्या हि मधुरं काव्यं तस्मादपि सुभाषितम्।।

समस्त भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य देववाणी (संस्कृतभाषा) है। निश्चित रूप से उसका काव्य मधुर है और उससे भी अधिक (मधुर है उसके) सुन्दर वचन हैं।

सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्या विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।।

सुख की इच्छा करनेवाले को विद्या त्याग देनी चाहिए और विद्यार्थी को सुख त्याग देना चाहिए।सुख चाहनेवाले (व्यक्ति) को विद्या कहाँ और विद्या प्राप्त करनेवाले को सुख कहाँ?

जल-बिन्दु-निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च।।

जल की बूंद-बूंद गिरने से घड़ा भर जाता है।यही समस्त विद्याओं, धर्म और धन का कारण है (अर्थात् थोड़ा-थोड़ा करके हो विद्या, धर्म और धन का संचय होता है।)

काव्य-शास्त्र-विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।

बुद्धिमान् व्यक्तियों का समय काव्य और शास्त्र की चर्चारूपी मनोरंजन में व्यतीत होता है। और मूर्ख व्यक्तियों का (समय) बुरी आदतों, सोने अथवा लड़ाई-झगड़े मे (व्यतीत होता है)।

न चौरहार्यं न च राजहार्यं , न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

ऐसा विद्या-धन न चोर द्वारा चुराया जा सकता है, न राजा द्वारा छीना जा सकता है, न भाई द्वारा बाँटा जा सकता है और न हो भारकारक है तथा व्यय करने से नित्य बढ़ता है, जो सब धनों में प्रधान है।

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्।।

पीठ-पोछे कार्य को नष्ट करनेवाले और सामने प्रिय बोलनेवाले, मित्र को वैसे ही त्याग देना चाहिए, जिस प्रकार मुख में या ऊपरी हिस्से में दूधवाले (किन्तु अन्दर) विष के घड़े को (त्याग देते हैं)।

उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

सूर्य उदय के समय लाल होता है और अस्त होते समय भी लाल होता है। महान् पुरुष सम्पत्ति और विपत्ति अर्थात् सुख-दुःख में एक-जैसे होते हैं।

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

दुष्ट की विद्या विवाद के लिए, धन अहंकार के लिए और शक्ति दूसरो की पीड़ा पहुँचाने के लिए होती है। इसके विपरीत सज्जन की विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति दूसरो की रक्षा के लिए होती है।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।।

बिना विचारकर कार्य को नहीं करना चाहिए। अज्ञान परम आपत्तियों का स्थान है।सोच-विचारकर कार्य करनेवाले व्यक्ति का गुणों की लोभी सम्पत्तियाँ (लक्ष्मी) स्वयं ही वरण करती हैं।

Gyansindhu Coaching Classes

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति।।

वज्र से भी कठोर और पुष्प से भी कोमल, असाधारण व्यक्तियों के चित्त को कौन जान सकता है?

प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं सः पुत्रो,
यद् भर्तुरेव हितमिच्छति तत् कलत्रम्।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यद्
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते।।

जो पिता को अच्छे आचरण से प्रसन्न करता है वह पुत्र, जो पति का ही हित चाहती है वह स्त्री, जो सुख और दुःख में समान व्यवहारवाला है वह मित्र इन तीनों को संसार में पुण्यशाली लोग ही पाते हैं।

कामान् दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मी। कीर्तिं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति।
शुद्धां शान्तां मातरं मङ्गलानां। धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः।।

जो समस्त इच्छाओं को पूर्ण करती है, दरिद्रता को दूर करती है, जो कीर्ति में वृद्धि करती है और पापों को नष्ट करती है। शुद्ध, शान्त और सम्पूर्ण कल्याणों की जननी है । । धैर्यवानों (ज्ञानियों) ने सत्य एवं प्रिय वाणी को ऐसी गाय कहा है।

व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतुः न खलु बहिरुपाधीन् प्रीतयः संश्रयन्ते।
विकसति हि पतङ्गस्योदये पुण्डरीकं द्रवति च हिमरश्मावुद्गतेः चन्द्रकान्तः।।

पदार्थों को मिलाने वाला कोई आन्तरिक कारण ही होता है। निश्चय ही प्रीति (प्रेम) बाह्य कारणों पर निर्भर नहीं करती। जैसे-कमल सूर्य के उदय होने पर ही खिलता है, और चन्द्रकान्त-मणि चन्द्रमा के उदय होने पर ही द्रवित होती (पिघलती) है।

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा। न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

नीति में निपुण लोग निन्दा करे या स्तुति (प्रशंसा) करें,लक्ष्मी आए या अपनी इच्छानुसार चली जाए।चाहे आज ही मृत्यु हो अथवा युगों के बाद हो। धैर्यशाली पुरुष न्यायोचित मार्ग से पग भर भी नहीं डोलते हैं, अर्थात् विचलित नहीं होते हैं।

ऋषयो राक्षसीमाहुः वाचमुन्मत्तदृप्तयोः।
सा योनिः सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निऋतिः।।

ऋषियों ने उन्मत्त और अहंकारी (व्यक्तियों) की वाणी को राक्षसी वाणी कहा है। वह समस्त वैरो को उत्पन्न करनेवाली और संसार की विपत्ति (का कारण) होती है।

(5) महामना मालवीयः

महापुरुषाः लौकिक प्रलोभनेषु बद्धाः नियतलक्ष्यान्न कदापि प्रश्यन्ति। देशसेवानुरक्तोऽयं युवा उच्चन्यायालयस्य परिधी स्थातुं नाशक्नोत् । पण्डितमोतीलालनेहरू- लालालाजपतरायप्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रतासङ्ग्रामेऽवतीर्णः । देहल्यां प्रयोविंशतितमे काङ्ग्रेसस्याधिवेशनेऽयम् अध्यक्षपदमलङ्कृतवान्। 'रोलट एक्ट इत्याख्यस्य विरोधेऽस्य ओजस्विभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्लासका भीता जाताः । बहुवारं कारागारे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरः देशसेवाव्रतं नात्यजत् ।

हिंदी अनुवाद — महान् पुरुष सांसारिक प्रलोभनों में फँसकर निश्चित लक्ष्य से कभी विचलित नहीं होते हैं। देशसेवा में अनुरक्त यह युवक (मालवीय) उच्च न्यायालय की सीमा में नहीं रह सका। पण्डित मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय आदि अन्य राष्ट्रनायकों के साथ वे भी देश के स्वतन्त्रता संग्राम में उतरे। दिल्ली में तेईसवें कांग्रेस अधिवेशन में इन्होंने (कांग्रेस के) अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। 'रौलट एक्ट' नामक कानून के विरोध में इनके ओजस्वी भाषण सुनकर अंग्रेज शासक भयभीत हो गए। अनेक बार जेल में जाने के बाद भी इस वीर ने देशसेवा के व्रत को नहीं छोड़ा।

महामनस्विनः मदनमोहनमालवीयस्य जन्म प्रयागे प्रतिष्ठित- परिवारेऽभवत् । अस्य पिता पण्डितब्रजनाथमालवीयः संस्कृतस्य सम्मान्यः विद्वान् आसीत् । अयं प्रयागे एव संस्कृतपाठशालायां राजकीयविद्यालये प्योर सेण्ट्रल महाविद्यालये च शिक्षां प्राप्य अत्रैव राजकीय विद्यालये अध्यापनम् आरब्धवान्। युवकः मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्णभाषणेन जनानां मनांसि अमोहयत् । अतः अस्य सुहृदः तं प्राड्विवाकपदवीं प्राप्य देशस्य श्रेष्ठतरां सेवां कर्तुं प्रेरितवन्तः तदनुसारम् अयं विधिपरीक्षामुत्तीर्य प्रयागस्थे उच्चन्यायालये प्राड्विवाककर्म कर्तुमारभत् । विधेः प्रकृष्टज्ञानेन, मधुरालापेन, उदारव्यवहारेण चायं शीघ्रमेव मित्राणां न्यायाधीशानाञ्च सम्मानभाजनमभवत्।

हिंदी अनुवाद - महामना मदनमोहन मालवीय का जन्म प्रयाग के परिवार में हुआ था। इनके पिता पं० ब्रजनाथ मालवीय संस्कृत के सम्माननीय विद्वान् थे। इन्होंने प्रयाग में ही संस्कृत पाठशाला, राजकीय विद्यालय और म्योर सेण्ट्रल महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर यहीं राजकीय विद्यालय में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। युवक मालवीय ने अपने ओजस्वी भाषण से लोगों के मन को मोह लिया। अतः इनके मित्रों ने इन्हें अधिवक्ता (वकील) की पदवी प्रदान कर देश की सर्वश्रेष्ठ सेवा करने के लिए प्रेरित किया । तदनुसार इन्होंने कानून की परीक्षा उत्तीर्ण कर, प्रयाग के उच्च न्यायालय में वकालत प्रारम्भ की। कानून के उत्तम ज्ञान, मधुर बातचीत तथा उदार व्यवहार के कारण शीघ्र ही वे मित्र और न्यायाधीशों के सम्मान के पात्र बन गए।

महामना विद्वान् वक्ता, धार्मिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत् । परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत्। यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत् तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः सर्वविधं साहाय्यञ्च अकरोत्। प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत्।

हिंदी अनुवाद - महामना (मदनमोहन मालवीय) विद्वान् वक्ता, धार्मिक नेता तथा निपुण पत्रकार थे, परन्तु इनका सर्वोच्च गुण जनसेवा ही था। जहाँ कहीं भी ये लोगों को दुःखी तथा पीड़ित होता देखते, वहाँ पर शीघ्र ही उपस्थित हो जाते थे तथा सब प्रकार की सहायता करते थे। प्राणियों की सेवा ही इनका स्वभाव था।

Gyansindhu Coaching Classes

पञ्चशील सिद्धान्ताः

बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन् । परमद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्री सहयोग - कारणानि, विश्वबन्धुत्वस्य विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति । राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरूमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्य एवाभवत्। यतो हि उभावपि देशी बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ । आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः । एवं च व्यवस्थिताः-

सन्दर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'संस्कृत - खण्ड' में संकलित 'पञ्चशील सिद्धान्ताः' नामक पाठ से अवतरित है।

हिंदी अनुवाद - बौद्धकाल में वैयक्तिक जीवन के उत्थान के लिए इन सिद्धान्तों का प्रयोग होता था किन्तु आज ये सिद्धान्त राष्ट्रों की परस्पर मित्रता और सहयोग के हेतु, विश्वबन्धुत्व और विश्वशान्ति के साधन हैं। राष्ट्रनायक पण्डित जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमन्त्रित्वकाल में चीन देश के साथ भारत की मित्रता पंचशील सिद्धान्तों के आधार पर ही हुई थी क्योंकि दोनों ही देश बौद्ध धर्म में आस्था रखनेवाले हैं। आधुनिक संसार में पंचशील सिद्धान्तों ने नवीन राजनैतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया है और वे इस प्रकार निश्चित किए गए हैं।

महर्षिर्दयानन्दः (साहित्यिक हिन्दी)

जन्मतः दशमे दिने 'शिवं भजेदयम्' इति बुद्धया पिता स्वसुतस्य मूलशङ्कर इति नाम अकरोत् अष्टमे वर्षे चास्योपनयनमकरोत् । त्रयोदशवर्ष प्राप्तवतेऽस्मै मूलशङ्कराय पिता शिवरात्रिव्रतमाचरितुम् अकथयत्। पितुराज्ञानुसारं मूलशङ्करः सर्वमपि व्रतविधानमकरोत् । रात्रौ शिवालये स्वपित्रा समं सर्वान् निद्रितान् विलोक्य स्वयं जागरितोऽतिष्ठत् शिवलिङ्गस्य चोपरि मूषिकमेकमितस्ततः विचरन्तं दृष्ट्वा शङ्कितमानसः सत्यं शिवं सुन्दरं लोकशङ्करं शङ्करं साक्षात्कर्तुं हदि निश्चितवान्। ततः प्रभृत्येव शिवरात्रेः उत्सवः 'ऋषिबोधोत्सवः' इति नाम्ना श्रीमद्दयानन्दानुयायिनाम् आर्य- समाजिनां मध्ये प्रसिद्धोऽभूत् ।

हिंदी अनुवाद - जन्म के दसवें दिन 'यह शिव को भजनेवाला हो' इस विचार से पिता ने अपने पुत्र का 'मूलशंकर' नाम रखा और आठवें वर्ष में इसका यज्ञोपवीत संस्कार किया। तेरह वर्ष की अवस्था) प्राप्त होने पर इस मूलशंकर को पिता ने शिवरात्रि का व्रत करने के लिए कहा। पिता की आज्ञानुसार मूलशंकर ने व्रत का समस्त विधान किया। रात्रि में शिवालय में अपने पिता के साथ सबको सोया हुआ देखकर (वे) स्वयं जागते हुए बैठे रहे और शिवलिंग के ऊपर एक चूहे को इधर-उधर घूमते हुए देखकर शंकित मन से सत्यं शिवं सुन्दरम् और लोक का कल्याण करनेवाले शंकर का साक्षात्कार करने का हृदय में निश्चय किया। तब से लेकर शिवरात्रि का उत्सव 'ऋषिबोधोत्सव' नाम से श्रीमान् दयानन्द के अनुयायी आर्य समाजियों के मध्य प्रसिद्ध हुआ।

यदा अयं षोडशवर्षदेशीयः आसीत् तदास्य कनीयसी भगिनी विषूचिकया पञ्चत्वं गता । वर्षत्रयानन्तरमस्य पितृव्योऽपि दिवङ्गतः । द्वयोरनयोः मृत्युं दृष्ट्वा आसीदस्य मनसि कथमहं कथंवार्य लोकः मृत्युभयात् मुक्तः स्यादिति चिन्तयतः एवास्य हृदि सहसैव वैराग्यप्रदीपः प्रज्वलितः । एकस्मिन् दिवसे अस्तङ्गते भगवति भास्वति भूलशङ्करः गृहमत्यजत् ।

हिंदी अनुवाद - जब ये लगभग सोलह वर्ष के थे, तब इनकी छोटी बहन हैजे से मृत्यु को प्राप्त हो गई (मर गई)। तीन वर्ष बाद इनके चाचा भी स्वर्ग सिधार गए । इन दोनों की मृत्यु को देखकर इनके मन में (विचार) आया कि कैसे मैं और कैसे यह संसार मृत्यु के भय से मुक्त हो सकता है? ऐसा सोचते हुए इनके हृदय में सहसा वैराग्य का दीपक प्रज्वलित हो उठा। एक दिन भगवान् सूर्य के अस्त होने पर मूलशंकर ने घर त्याग दिया।

प्रीतः गुरुस्तमभाषत - सौम्य !विदितवेदितव्योऽसि, नास्ति किमपि अविदितं तव। अद्यत्वेऽस्माकं देशः अज्ञानान्धकारे निमग्नो वर्तते, नार्यः अनाद्रियन्ते शूद्राश्च तिरस्क्रियन्ते, अज्ञानिनः पाखण्डिनश्च पूज्यन्ते । वेदसूर्योदयमन्तरा अज्ञानान्धकारं न गमिष्यति। स्वस्त्यस्तु ते उन्नमय पतितान्, समुद्धर स्त्रीजातिं, खण्डय पाखण्डम्, इत्येव मेऽभिलाष इयमेव च मे गुरुदक्षिणा ।

हिंदी अनुवाद — प्रसन्न होकर गुरु ने उनसे कहा - "सौम्य ! तुम जानने योग्य सभी बातों को जान गए हो, तुमको अब कुछ भी अज्ञात नहीं है आजकल हमारा देश अज्ञानरूपी अन्धकार में निमग्न है नारियों का अनादर किया जाता है, शब्दों का तिरस्कार किया जाता है तथा अज्ञानी और पाखण्डी पूजे जाते हैं। वेदरूपी सूर्योदय के बिना अज्ञानरूपी अन्धकार नहीं हटेगा तुम्हारा कल्याण हो, पतितों को ऊपर उठाओ, स्त्री जाति का उद्धार करो, पाखण्ड का खण्डन करो, यही मेरी इच्छा है और यही मेरी गुरु-दक्षिणा भी है।"

Gyansindhu Coaching Classes

गुरुणा एवम् आज्ञप्तः महर्षिर्दयानन्दः एतद्देशवासिनी जनान् उद्ध कर्मक्षेत्रेऽवातरत्। सर्वप्रथमं हरिद्वारे कुम्भपर्वणि भागीरथीतटे पाखण्डखण्डिनी पताकामस्थापयत्। ततश्च हिमाद्रि गत्वा त्रीणि वर्षाणि तप अतप्यत । तदनन्तरमयं प्रतिपादितवान् — ऋग्यजुस्सामाथर्वाणो वेदा नित्या ईश्वरकर्तृकाश्च, ब्राह्मण-वैश्य-शूद्राणां गुणकर्मस्वभावैः विभागः न तु जन्मना, चत्वार एव आश्रमाः, ईश्वर एक एव ब्रह्म-पितृ देवातिथि बलि- वैश्व देवा: पञ्चमहायज्ञाः नित्यं करणीयाः । 'स्त्रीशूद्री वेदं नाधीयाताम्' अस्य वाक्यस्य असारतां प्रतिपाद्य सर्वेषां वेदाध्ययनाधिकारं व्यवस्थापयत् । एवमयं पाखण्डोन्मूलनाय वैदिकधर्मसंस्थापनाय च सर्वत्र भ्रमति स्म ।

हिंदी अनुवाद - गुरु से इस प्रकार आज्ञा पाकर महर्षि दयानन्द इस देश के निवासी लोगों के उद्धार के लिए कर्मक्षेत्र में कूद पड़े। सर्वप्रथम हरिद्वार में कुम्भ पर्व पर गंगा के किनारे पाखण्ड का नाश करनेवाली ध्वजा को स्थापित किया। तत्पश्चात् हिमालय पर जाकर तीन वर्ष तक तप किया। तदनन्तर इन्होंने प्रतिपादित किया कि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद नित्य हैं और ईश्वरकृत हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का विभाजन गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार है, न कि जन्म से आश्रम चार ही हैं। ईश्वर एक ही है। ब्रह्म, पितृ देव, अतिथि तथा बलिवैश्वदेव-ये पाँच महायज्ञ नित्य ही करने चाहिए। "स्त्री और शुद्र को वेद नहीं पढ़ने चाहिए" इस वाक्य की निस्सारता का प्रतिपादन करके सभी के लिए वेद के अध्ययन के अधिकार की व्यवस्था की। इस प्रकार ये पाखण्ड के उन्मूलन के लिए और वैदिक धर्म की स्थापना के लिए सर्वत्र घूमते रहे।

हिन्दी - संस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत् । हिन्दी हिन्दु - हिन्दुस्थानाना मुत्थानाय अयं निरन्तरं प्रयत्नमकरोत्। शिक्षयैव
देशे समाजे च नवीन प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत् । अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत जनाश्च महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन्, तेन निर्मितोऽयं विशाल विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति। साधारणस्थितिकोऽपि जनः महतोत्साहेन मनस्वितया, पौरुषेण च असाधारणमपि कार्य कर्तुं क्षमः उत्यदर्शयत् मनीषिमूर्धन्यः मालवीयः । एतदर्थमेव जनास्तं महामना त्युपाधिना अभिधातुमारब्धवन्तः ।

हिंदी अनुवाद - इनका हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा पर अधिकार था हिन्दी हिन्दू और हिन्दुस्तान के उत्थान के लिए इन्होंने निरन्तर प्रयत्न किया। शिक्षा से ही देश और समाज में नवीन प्रकाश का उदय होता है अतः मालवीयजी ने बनारस में 'काशी विश्वविद्यालय' की स्थापना की। इसके निर्माण के लिए इन्होंने लोगों से धन माँगा और लोगों ने इस महान् ज्ञान यज्ञ में इन्हें बहुत सा धन दिया, उससे निर्मित यह विशाल विश्वविद्यालय भारतीयों की दानशीलता और मालवीयजी के यश की प्रतिकृति सा सुशोभित हो रहा है। साधारण (व्यक्ति) भी महान् उत्साह, विचारशीलता और पुरुषार्थ से असाधारण कार्य भी कर सकता है। इस बात को विद्वानों में श्रेष्ठ मालवीयजी ने दिखा दिया। इसीलिए लोगों ने इनको 'महामना' की उपाधि से सम्बोधित करना प्रारम्भ कर दिया।

Gyansindhu Coaching Classes

दूतवाक्यम्

वासुदेवः - भोः सुयोधन! अलं बन्धुजने परुषमभिधातुम्-

कर्त्तव्यो भ्रातृषु स्नेहो विस्मर्तव्या गुणेतराः ।
सम्बन्धो बन्धुभिः श्रेयान् लोकयोरुभयोरपि ॥

दुर्योधनः - देवात्यजैर्मनुष्याणां कथं वा बन्धुता भवेत् । पिष्टपेषणमेतावत् पर्याप्तं छिद्यतां कथा ॥

वासुदेवः - भोः सुयोधन किं न जानासि अर्जुनस्य पराक्रमम्।

दुर्योधनः - न जानामि ।

वासुदेवः - भोः श्रूयताम्, एकेनैव अर्जुनेन तदा विराट्नगरे भीष्मादयो निर्जिताः । अपि च चित्रसेनेन नभस्तलं नीयमानस्त्वं फाल्गुनेनैव मोचितः । अतः - दातुमर्हसि मद्वाक्याद् राज्यार्द्ध धृतराष्ट्रज । अन्यथा सागरान्तां गां हरिष्यन्ति हि पाण्डवाः ॥

अनुवाद - वासुदेव - हे सुयोधन! बन्धुजनों के लिए कठोर वचन न कहो-१लोक - भाइयों से स्नेह करना चाहिए, उनके दोषों को भुला देना चाहिए। भाइयों से मेल (सम्बन्ध) दोनों ही लोकों में कल्याणकारी होता है।

दुर्योधन – १लोक - देवपुत्रों के साथ मनुष्यों का भाईचारा कैसे हो सकता है? इतना पिष्टपेषण अर्थात् बार-बार (एक ही बात को) कहना पर्याप्त हो चुका, अब इस कथा को बन्द कीजिए ।

वासुदेव — हे सुयोधन! क्या तुम अर्जुन के पराक्रम को नहीं जानते ?

दुर्योधन – (मैं) नहीं जानता।

वासुदेव - हे (दुर्योधन) सुनो! अकेले ही अर्जुन ने विराट्नगर में भीष्म आदि को जीता था और चित्रसेन के द्वारा आकाश में ले जाए जाते तुमको भी अर्जुन ने ही छुड़ाया था; अत:-

दुर्योधनः - कथं कथं हरिष्यन्ति हि पाण्डवाः-

प्रहरति यदि युद्धे मारुतो भीमरूपी
प्रहरति यदि साक्षात्पार्थरूपेण शक्रः ।
परुषवचनदक्ष ! त्वदुवचोभिनं दास्ये
तृणमपि पितृभुक्ते वीर्यगुप्ते स्वराज्ये ॥

दुर्योधन – कैसे, पाण्डव कैसे छीन लेंगे-
श्लोक – यदि युद्ध में भीम के रूप में स्वयं वायु देवता भी प्रहार करें और अर्जुन के रूप साक्षात् इन्द्र भी प्रहार करें तो भी कठोर वचन बोलने में चतुर कृष्ण! तुम्हारे कहने से (मैं) पिता के द्वारा भोगे गए, पराक्रम द्वारा रक्षित राज्य का एक तिनका भी नहीं दूँगा ।

Gyansindhu Coaching Classes